B.Com.II Money & Banking(s) | By, Sujeet Kr. Suman R.N.C. Hajipur

Q.No.1 पत्र - मुद्रा क्या है? इसके गुण - दोषों का वर्णन करें?
(Paper Standard)

उत्तर

पत्र - मुद्रामान आज के युग की सर्वश्रेष्ठ व्यवस्था है, क्योंकि यह सरल, लोचदार तथा मितव्ययतापूर्ण है। पत्र मुद्रामान के अन्तर्गत देश में पत्र मुद्रा ही मुख्य मुद्रा होती है और धातु की अनेक सहायक मुद्राएँ चलन में रहती हैं। पत्र मुद्रामान के अन्तर्गत कागज के नोट किसी भी धातु में परिवर्तनशील नहीं होते हैं और न ही उनके पीछे कोष रखने की आवश्यकता होती है। यह मुद्रा - व्यवस्था सरकार की साख पर चलती है और इसे प्राय: आर्थिक अथवा राजनीतिक संकट की अवस्था में अपनाया जाता है, इसलिए इसे साख मान (Credit Standard), प्रादिष्ट मान (Fiat Standard) अथवा प्रबंधित मान (Managed Standard) भी कहा जाता है।

* पत्र - मुद्रा के गुण :-

(i) मुद्रा प्रणाली सस्ती होना → पत्र मुद्रामान बहुत सस्ता होता है, क्योंकि कागज के नोट निकालना सरल है, उनकी घिसावट होने पर नये नोट निकालने में विशेष खर्च नहीं होता और सोने - चाँदी की भाँति खानों पर करोड़ों रु विनियोग करने की आवश्यकता नहीं है।

(ii) धातु की बचत → कागजी नोटों का दैनिक जीवन में प्रयोग करने से सोने - चाँदी की बचत हो जाती है और सोने - चांदी का प्रयोग कोष रखने या विदेशी भुगतान करने में हो सकता है।

(iii) लोचपूर्ण होना → पत्र मुद्रामान बहुत लोचपूर्ण है, क्योंकि इस व्यवस्था में मुद्रा की मात्रा में सुगमता से परिवर्तन किया जा सकता है।

(iv) भुगतान में सुविधा → पत्र मुद्रामान व्यवस्था के कारण ही संसार में बैंकिंग व्यवस्था का विकास हुआ है, क्योंकि कागजी नोटों में लेन-देन, गिनती तथा जमा, आदि करने की बहुत सुविधा रहती है।

P.T.O

Scanned with CamScanner

(v) विकास योजना में सहायक → पत्र-मुद्रामान एक सस्ती और सरल व्यवस्था है जिससे विकास के लिए रकम प्राप्त की जा सकती है। इस दृष्टि से पत्रमान आर्थिक विकास का मित्र है। दूसरा साधन विदेशी सहायता का है, किन्तु जो देश विदेशी सहायता पर अधिक निर्भर करते हैं उनकी आर्थिक और राजनीतिक आजादी खतरे में पड़ जाती है, क्योंकि विदेशी सहायता देने वाले देश अनेक प्रकार के आर्थिक और राजनीतिक दबाव डालने का प्रयत्न करते हैं, पत्र मुद्रामान अपनाने वाला देश इन दबावों से सर्वथा मुक्त रहता है,

(vi) बैंकिंग विकास को बल → पत्र मुद्रामान व्यवस्था भुगतान की दृष्टि से बहुत सुविधाजनक है, क्योंकि गिनने, एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाने तथा जमा रखने में पत्र मुद्रा बहुत सुविधा प्रदान करती है,

(vii) एकरूपता → एक ही वर्ग की मुद्रा का रूप, रंग और आकार-प्रकार समान होता है, जैसे कि एक रु के नोट अलग आकार व रंग के, दो रु के नोट अलग आकार-प्रकार, रंग आदि के होते हैं। इससे मुद्रा व्यवस्था बहुत वैज्ञानिक बन जाती है और सभी लोग भुगतान करने में सुविधा अनुभव करते हैं।

(viii) जालसाजी से रक्षा → कागज के नोट प्राय: बढ़िया कागज पर विशेष प्रकार के प्रेस में छपते हैं और उनमें विशेष चिह्न अंकित रहता है जो साधारण प्रेसों द्वारा अंकित नहीं हो सकता। अत: जाली नोटों का पकड़ा जाना बहुत सरल होता है।

(ix) उत्पत्ति के साधनों का पूर्ण उपयोग संभव → धातुमान की प्रवृत्ति संकुचन की होती है। चूँकि धातुमान के अन्तर्गत धातु की उपलब्धि सीमित होने के कारण मुद्रा की न्यूनता रहती है, इसलिए उत्पादन बढ़ाने के लिए बनाए गए कार्यक्रमों के लिए धन का अभाव होता है।

Scanned with CamScanner

* पत्र-मुद्रा के दोष :—

(i) सीमित कार्य-क्षेत्र → पत्र मुद्रामान के अन्तर्गत निकाले गए नोट अपने-अपने देश में ही लेन-देन के लिए उपयोगी होते हैं। ये विदेशों में उपयोगी नहीं होते।

(ii) स्वयं संचालकता नहीं → पत्र मुद्रामान प्रायः एक प्रबंधित मान है अर्थात् देश के केन्द्रीय बैंक को कागजी मुद्राएं निकालने में सरकार द्वारा बनाए गए नियमों का पालन करना पड़ता है और मुद्रा की मात्रा, समय, आदि का भी ध्यान रखना होता है।

(iii) एक देश की अस्थिरता का दूसरे देशों पर प्रभाव → स्वर्णमान की भाँति ही प्रबंधित पत्र मुद्रामान के अन्तर्गत भी एक देश का आर्थिक संकट दूसरे देशों की अर्थव्यवस्था को प्रभावित करता है।

(iv) विमुद्रीकरण का भय → पत्र-मुद्रामान का एक गंभीर दोष यह है कि सरकार जब चाहे किसी वर्ग के नोटों को रद्द करने की घोषणा कर सकती है, जैसा कि भारत सरकार ने 1946, 1978 एवं 2018 में किया था। इससे अनेक लोगों को बहुत हानि उठानी पड़ती है।

(v) मूल्य में कमी के दुष्परिणाम → पत्र-मुद्रा की अधिक निकासी कर दिए जाने पर मुद्रा का मूल्य देश में और देश से बाहर कम हो जाता है, जिससे कई दुष्परिणाम होते हैं, यथा —

(क) जनता का मुद्रा पर से विश्वास घटना,
(ख) बचत-प्रवृत्ति घटना, (ग) विदेशी व्यापार में बाधा पड़ना।

(vi) विदेशी विनिमय दरों में घट-बढ़ → चूँकि इस मुद्रा-व्यवस्था में देश की मुद्रा का संबंध किसी भी धातु से नहीं होता, इसलिए विदेशी विनिमय दरों में उतार-चढ़ावों की कोई सीमा नहीं होती, जैसे कि स्वर्णमान के अन्तर्गत स्वर्ण बिंदुओं की सीमा के अंदर-चढ़ाव होते हैं,

(vii) आन्तरिक कीमत स्तर स्थिर न रहना

(viii) मुद्रा प्रसार का भय

(ix) विदेशी भुगतान में कठिनाई

—o—

Scanned with CamScanner